पैरासिटामॉल पर स्पष्ट चेतावनी की ज़रूरत

पैरासिटामॉल एक दर्द निवारक व बुखार-रोधी है और हमारे देश में क्रोसिन के नाम से बिकती है। आजकल यह बगैर डॉक्टरी पर्ची के मिल जाती है। मगर अमरीका में एक हालिया अध्ययन में पता चला है कि हर वर्ष करीब 20,000 अमरीकी लोग पैरासिटामॉल (अमरीका में ब्रांड नाम टायलेनॉल के नाम से मिलती है) की ज़्यादा मात्रा खाने की वजह से लीवर क्षति के शिकार होकर अस्पताल पहुंचते हैं। शिकैगो के नॉर्थवेस्टर्न विश्वविद्यालय की जेनिफर किंग का यह अध्ययन *अमेरिकन जर्नल ऑफ प्रिवेंटिव मेडिसिन* में प्रकाशित हुआ है।

दरअसल लीवर पर पैरासिटामॉल के असर काफी समय से ज्ञात हैं मगर एक बुखार-रोधी व दर्द निवारक के रूप में इसकी प्रभाविता इतनी बढ़िया है कि लोग इसे लेते रहते हैं। जेनिफर किंग ने अपने अध्ययन के दौरान जिन 45 लोगों के विस्तृत इंटरव्यू किए उनमें से मात्र 19 लोगों ने ही दवा लेने से पहले लेबल पर छपी जानकारी पढ़कर उसमें मौजूद पदार्थों के बारे में जानने का प्रयास किया था। मात्र 14 प्रतिशत ही यह जानते थे कि जो दवा वे ले रहे हैं, उसमें प्रभावी घटक पैरासिटामॉल है।

किंग का कहना है कि कई मर्तबा लोग दैनिक अनुशंसित मात्रा से ज़्यादा दवा ले लेते हैं। मगर ज़्यादा मामलों में यह होता है कि व्यक्ति अनजाने में ऐसी दो दवाइयां ले रहा होता है, जिन दोनों में ही पैरासिटामॉल होता है। किंग का तो मत है कि पैरासिटामॉल युक्त सारी दवाइयों पर ऐसा कोई चिन्ह बना होना चाहिए जिससे यह पता चल जाए कि उनमें यह पदार्थ है ताकि लोग पैरासिटामॉल की दुगनी खुराक लेने से बच सकें। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता

व्यक्तिगत 150 रुपए

संस्थागत 300 रुपए

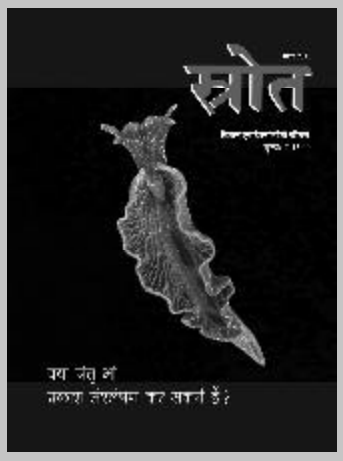

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से

ई-10,शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

के पते पर भेजें।